

পাট ও সমবর্গীয় তন্তু ফসল চাষীদের জন্য কৃষি পরামর্শ

প্রকাশনা

ভা.কৃ.অনু.প- ক্রিজাফ, ব্যারাকপুর

২৪ এপ্রিল - ৮ মে, ২০২২ (সংস্করণ সংখ্যাঃ ০৮/২০২২)



भा.कृ.अ.प. -केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान
ICAR-Central Research Institute for Jute and Allied Fibers

An ISO 9001: 2015 Certified Institute

Barrackpore, Kolkata-700120, West Bengal

www.icar.crijaf.gov.in



भा.कृ.अ.प. -केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान



ICAR-Central Research Institute for Jute and Allied Fibers

पाट ओ सहयोगी फसल उतुपादनकारी चाषिदेर जन्य कृषि-परामर्श
२४ एप्रिल - ८ मे, २०२२

I. पाट उतुपादनकारी राज्यांशुलिर एइ समयेर सञ्जाव्य आबहाओयार परिस्थिति

राज्य/ कृषि-जलवायु अखणल/ जेला	आबहाओयार पूर्वाभास
गाङ्गेय पश्चिमबङ्ग मुर्शिदाबाद, नदिया, हगली, हाओड़ा, उतुतर २४ परगना, पूर्व बर्धमान, पश्चिम बर्धमान, दक्षिण २४ परगना, बाँकुड़ा, बीरभुम	आगामी २४-२९ एप्रिल वृष्टिर् सञ्जावना नेइ। सर्वोच्च तापमात्रा ३७-३८ डिग्रि एवं सर्वनिम्न तापमात्रा २७-२८ डिग्रि सेन्टिग्रेडेर् मतो থাকवे।
हिमालय सन्निहित पश्चिमबङ्ग दार्जिलिङ, कोचबिहार, आलिपुरदुयार, जलपाईगुड़ी, उतुतर दिनाजपुर, दक्षिण दिनाजपुर, मालदा	आगामी २४-२९ एप्रिल वृष्टिर् सञ्जावना (मोेट वृष्टिर् परिमान २९ मिलिमिटाेर पर्यन्त)। एइ अखणले सर्वोच्च तापमात्रा ३०-३२ डिग्रि एवं सर्वनिम्न तापमात्रा २१-२३ डिग्रि सेन्टिग्रेडेर् मतो থাকवे।
आसामः मध्य ब्रह्मपुत्र उतुपत्या क्शेत्र मरिगाँव, नओगाँव	आगामी २४-२९ एप्रिल वृष्टिर् सञ्जावना (मोेट वृष्टिर् परिमान ४० मिलिमिटाेर पर्यन्त)। सर्वोच्च तापमात्रा २९-३० डिग्रि एवं सर्वनिम्न तापमात्रा २०-२१ डिग्रि सेन्टिग्रेडेर् मतो থাকवे।
आसामः निम्न ब्रह्म TM त्र उ TM त्या क्शेत्र गोयाल TM ड़ा, धुबड़ि, कोकड़ाबाड़, बङ्गाईगाँव, वर TM टा, नलवाड़ि, कामरु TM , बास्त्रा, चिराङ्ग	आगामी २४-२९ एप्रिल वृष्टिर् सञ्जावना (मोेट वृष्टिर् परिमान ८० मिलिमिटाेर पर्यन्त)। सर्वोच्च तापमात्रा २८-३० डिग्रि एवं सर्वनिम्न तापमात्रा २१-२२ डिग्रि सेन्टिग्रेडेर् मतो থাকवे।
बिहारः कृषि-जलवायु अखणल २ (उतुतर- TM ूर्व अखणल) TM ूर्णिया, काटिहार, सहर्ष, सु TM ाल, माधे TM ुरा, खागारिया, आरारिया, किषाणगङ्ग	आगामी २४-२९ एप्रिल वृष्टिर् सञ्जावना नेइ। सर्वोच्च तापमात्रा ३८-४० डिग्रि एवं सर्वनिम्न तापमात्रा २४-२७ डिग्रि सेन्टिग्रेडेर् मतो থাকवे।
उड़ियाः उतुतर-पूर्व तटीय समभूमि वालेश्वर, भद्रक, जाजपुर	आगामी २४-२९ एप्रिल हालका वृष्टिर् सञ्जावना (मोेट वृष्टिर् परिमान २ मिलिमिटाेर पर्यन्त)। सर्वोच्च तापमात्रा ३९-३८ डिग्रि एवं सर्वनिम्न तापमात्रा २९-२७ डिग्रि सेन्टिग्रेडेर् मतो থাকवे।
उड़ियाः उतुतर- TM ूर्व ओ दक्षिण- TM ूर्व समतल अखणल केन्द्र TM ड़ा, खुर्दा, जगत्सिंह TM ुर, TM ुरी, नयागड़, कटक (आंशिक) एवं गङ्गाम (आंशिक)	आगामी २४-२९ एप्रिल वृष्टिर् सञ्जावना नेइ। सर्वोच्च तापमात्रा ३७-३८ डिग्रि एवं सर्वनिम्न तापमात्रा २९-२९ डिग्रि सेन्टिग्रेडेर् मतो থাকवे।

तथा सूत्रः भारतीय आबहाओया विभाग (<http://mausam.imd.gov.in> एवं www.weather.com)

II. TMपाट फसलेंर जन्य कृषि TMरामर्श

१। देरिंते लागानो -ये चाषिरा एखनो पाट लागानि

- जमि तैरी सम्पूर्ण करे, ताडाताडि पाट बीज लागते हवे। पाटेर भालो फलन ओ उमृत गुनमानेर तन्तु पाओयार जन्य जे.आर.ओ २०४ (सुरेन) जातेर पाट बीज व्यवहार करते हवे। पाट बीज लागानेर चार घन्टा आगे प्रति किलो बीजेर जन्य २ ग्राम हिसाबे कार्बेन्डाजिम (व्याभिस्टिन) ५० डब्लू.पि दिये बीज शोधन करते हवे। यदि जे.आर.ओ २०४ (सुरेन) जातेर पाट बीज ना पाओया याम, तबे जे.आर.ओ ५२४, इरा, तरुण, एन.जे १०१० जातेर बीज लागानो येते पारे। कचि अवस्थाय पाट शाक हिसाबे व्यवहारेर जन्य ओ एहि जातगुलि लागानो यावे। आई.सि.ए.आर-क्रिजाफ पाट बीज वपन यन्त्र व्यवहार करे सारिंते पाट बीज लागते हवे। एहि मेशिने पाट बीज बुनते विघा प्रति (०.१३३ हेक्टर) मात्र ३५०-४०० ग्राम पाट बीज लागवे। सारिं थेके सारिंर दूरत हवे २०-२५ सेमि एवं बीज माटिंर ३ सेमि गतीरे लागते हवे।
- यदि एकासुंइ पाट बीज सारिंते बोनार सीडड्रिल यन्त्र ना पाओया याम, तबे विघा प्रति ८०० ग्राम बीज व्यवहार करे छिंटेये बोनो यावे; एवं तार पर जमिंर जेओ अवस्थाय क्रुइजाफ नेल उईडार चालिंये सारिं तैरी ओ आगाछा नियन्त्रण करा यावे। बीज बोनार ५-८ दिन परे एहि नेल उईडार चालाले, शिकड़ अषगले (०-१५ सेमि.) शतकरा ५-६ शतांश जल संरक्षण हय, माटिं (०-१० सेमि.) १-३ डिग्रि सेन्टिग्रेड ठांभा राखे एवं फले ३० दिन पर्यन्त पाटेर चारा खरा अवस्था थेके रक्षा पाय।
- जमि तैरीर समय भालोभावे मई दिते हवे, याते जमिंर माटिंर उपर धूलोर आसुरण तैरी हय, एते माटिंते जल संरक्षण हवे ओ सहजे पाट बीजेर अक्षुरोक्तम हवे।
- मावारी ओ यथेष्ट उर्वर जमिंर जन्य, नाइट्रोजेनः फसफेटः पटाशेर हेक्टर प्रति सुपारिश मात्रा हल ७०ः३०ः३० किलोग्राम। यदि जमि कम उर्वर हय, तबे एहि मात्रा हवे ८०ः४०ः४० किलोग्राम प्रति हेक्टेरे। नाइट्रोजेन घटित सार २ वारे चापान हिसाबे प्रयोग करते हवे। तबे फसफेट ओ पटाश सारेर सुपारिश मात्रार पुरोटाई जमि तैरीर शेघेर दिके माटिंते प्रयोग करते हवे। चाषिंदेर यदि माटिं परींकार पर पाओया माटिंर स्वास्थ्य कार्ड थाके, तबे सेई कार्डे उल्लेख करा हारे सार प्रयोग करते हवे।
- सेच सेवित पाटेर जमिंर आगाछा नियन्त्रणेर जन्य पाट बोनार ४८ घन्टा पर, प्रेटिलक्लोर (५० ईसि) ३ मिलिलिंटांर प्रति लिंटांर जले मिशिंये माटिंते स्प्रे करते हवे। यदि सेचेर सुविधा ना थाके, तबे पाट बोनार ४८ घन्टा परे, बुटाक्लोर (५० ईसि) ४ मिलिलिंटांर प्रति लिंटांर जले मिशिंये प्रयोग करते हवे।
- यदि पाट बोनार ५-६ दिन पर खरार मतो परिस्थिति हय, तबे छैटानो पद्धतिंते सेच दिते हवे। यदि वृष्टिंर संभावना थाके, तबे सेच देओयार आगे वृष्टिंर जन्य अपेक्षा करा येते पारे।



थाप-१ः जमि तैरी एवं प्राथमिक सार प्रयोग



थाप-२ः बीज लागानेर चार घन्टा आगे प्रति किलो बीजे २ ग्राम कार्बेन्डाजिम दिये बीज शोधन



थाप-३ः क्रुइजाफ पाट बीज वपन यन्त्र दिये सारिंते शोधित पाट बीज लागानो।



थाप-४ः सेच सुविधा युक्त जमिंते आगाछा नियन्त्रणेर जन्य प्रेटिलक्लोर ३ मिलि/ प्रति लिंटांर जले मिशिंये प्रयोग। सेच हीन जमिंते आगाछा नियन्त्रणेर जन्य बिउटाक्लोर ४ मिलि/ प्रति लिंटांर दिये प्रयोग।



थाप-५ः पाट लागानेर ४-८ दिन परे क्रुइजाफ नेल उईडार चालानो।

२। ११-२५ एप्रिले मध्ये लागानो पाट, फसले बयस : १५-३५ दिन

- यारा एप्रिले ११-२५ तारिखे मध्ये पाट लागियेहेन, तारा हालका जलसेच दिन, तारपर (२-३ दिन बादे) यांत्रिक पद्धति ते क्रिज्जाफ नेल उईडार वा एक चाका पाट निडानि यन्त्र (सिङ्गल हईल जुट उईडार) ब्यवहार करे आगाछा नियन्त्रण करबेन। चारा पातला करे प्रति बगमिडारे ५०-६० टि पाटेर चारा राखते हवे। आगाछा नियन्त्रण ओ चारा पातला करार पर (२१ दिन बयसे), नाईट्रोजेन घटित सार चापान हिसाबे दिते हवे। माबारी ओ यथेष्ट उर्वर जमिर जन्य २० किलो/प्रति हेक्टेरे एवंग कम उर्वर जमिर फ्लेदे २९ किलो/ प्रति हेक्टेरे सार प्रयोग करते हवे।
- सरूपता आगाछा नियन्त्रणे जन्य, घास गजानोर पर एवंग पाट लागानोर ८-१० दिन पर, कुईजालोफप इथाईल (५ ईसि) १ मिलि/ प्रति लिटारे अथवा पाट लागानोर १५ दिन पर, कुईजालोफप इथाईल (१० ईसि) ०.९५ मिलि/ प्रति लिटार जले मिशिजे स्प्रे करते हवे।
- पाटेर चारार (अक्कुरोआमारे पर थेके छोटे चारा अवस्थाय) गोड़ा केटे देओया नील ल्यादापोका वा इन्डिगो क्यारपिलारे आक्रमण बिबाये चाबिदेर सतर्क करा हचे। एई पोकार आक्रमण वृष्टि पर वा जलसेच देवार पर बेशि देखा यार। एई ल्यादा पोकागुलि जमिर माटिरे टेलेर निचे, पाट गाछेर गोड़ार काछे लुकिजे थाके। एदेर नियन्त्रणे जन्य बिकेलेर दिके क्लोरपाईरिफस (२० ईसि) २ मिलि/ प्रति लिटार जले मिशिजे स्प्रे करते हवे। यदि पोकार आक्रमण तार परेओ थाके, तबे प्रयोजने, ८-१० दिन पर आवार एई कीटनाशक एकई हारे प्रयोग करते हवे।
- माटि शुक्नो हवार जन्य, राईजोकाटनिया वा म्याक्रोफोमिना गोद्रेर छत्राक घटित गोड़ा पचा (काश ओ माटिरे संयोगे सुल) देखा येते पारे। एरकम हले (शतकरा ५ भागेर बेशि), सेचेर ब्यवस्था करुन, तारपर कपार अक्लिक्कोराइड (ब्लाइट्स् ५० डब्लु.पि) शतकरा ०.५ भाग द्रवण प्रयोग करुन। एई छत्राकनाशक ब्यवहारेर समय छिटानो मेशिनेर मुख-नल (नजेल) गाछेर गोड़ार दिके तक करे दिते हवे, याते गाछेर गोड़ार दिके बेशि ओषुध देओया यार।



पाट लागानोर २१ दिन पर, क्रिज्जाफ नेल उईडार वा एक चाका पाट निडानि यन्त्रे फला (स्फापार) युक्त अवस्थाय ब्यवहार।



नील ल्यादापोका वा इन्डिगो क्यारपिलार नियन्त्रणे जन्य पाट लागानोर १५ दिन पर क्लोरपाईरिफस (२० ईसि) २ मिलि/प्रति लिटार जले मिशिजे बिकेलेर दिके स्प्रे। प्रयोजने ८-१० दिन पर आवार स्प्रे।



शुक्नो माटिरे अवस्थाय, छत्राक-घटित गोड़ा-काश संयोगे सुल TMचा रोग। यदि रोग शतकरा ५ भागेर बेशि छडिये TMडे, क TMार अक्लिक्कोराइड ०.५ शतांशेरे द्रवण प्रयोग करुन।

৩। সময়মতো লাগানো পাট (২৫ মার্চ - ১০ এপ্রিল), ফসলের বয়সঃ ৩০-৪৫ দিন

- যদি চাপান সার দেওয়া না হয়ে থাকে, তবে মাটিতে রস অবস্থায় হেক্টর প্রতি ২০ কিলো নাইট্রোজেন ঘটিত সার প্রয়োগ করতে হবে। অথবা ৪০-৪৫ দিন বয়সে, চাপান সার দেবার পর জলসেচ করতে হবে ও প্রতি বর্গমিটারে ৫০-৫৫ টি পাটের চারা রাখতে হবে।
- কালবৈশাখী বা নিম্নচাপের প্রভাবে হঠাৎ বেশি বৃষ্টি হয়ে পাটের জমি জলমগ্ন হয়ে যেতে পারে, এতে পাটের বৃদ্ধিতে বিরূপ প্রভাব পড়ে। তাই এই সময়, পাটের জমিতে ১০ মিটার দূরে দূরে ২০ সেমি চওড়া ও ২০ সেমি গভীর জল নিকাশি নালা বানাতে হবে, যাতে বেশি বৃষ্টির অতিরিক্ত জল জমি থেকে বেরিয়ে যেতে পারে।
- পাট গাছের ৩০-৫০ দিন বয়সে, পাতের ডগার বন্ধ পাতাগুলি, বৃষ্টির পরে ধূসর পোকাকার (গ্রে উইভিল) দ্বারা আক্রান্ত হয়। গাছ বড় হবার সাথে সাথে, পাতার কাটা অংশগুলো বড় হতে থাকে। এই পোকা ধূসর বর্ণের, তার উপর সাদা বিন্দু বিন্দু দাগ, মাথা লম্বাটে - এদের পাতার উপরে দেখতে পাওয়া যায়। ক্লোরপাইরিফস্ (৫০ ইসি) এবং সাইপারমেথ্রিন (৫ ইসি) এর মিশ্রণ, ১.০-১.৫ মিলিলিটার বা ক্লোরপাইরিফস্ (২০ ইসি) ২ মিলিলিটার বা কুইন্যালফস (২৫ ইসি) ১.২৫ মিলিলিটার/ প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে স্প্রে করতে হবে।
- চাষিদের বিশেষভাবে সতর্ক হতে হবে যে - বৃষ্টির পরে যদি দিনের তাপমাত্রা বাড়ে ও বাতাসে জলীয় বাষ্পের পরিমাণ বেড়ে যায় - এই অবস্থায় শূঁয়োপোকাকার প্রাথমিক আক্রমণ হতে পারে। পাতার উপর এই পোকাকার ডিম ও ছোট ছোট শুককীট এক জায়গায় দলবদ্ধ ভাবে দেখা যায়। পরে দ্রুত ছড়িয়ে পড়ে ও পাতার ক্ষতি করে। তাই চাষিরা নজর করে দেখে, এই সব আক্রান্ত পাতা তুলে নষ্ট করে ফেলবেন। তাছাড়া প্রয়োজনে ল্যামডা সায়ালোথ্রিন (৫ ইসি) ১ মিলিলিটার বা ইন্ডাক্সাকার্ব (১৪.৫ ইসি) ১ মিলিলিটার/ প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে প্রয়োগ করতে হবে।
- পাটের বয়স যখন ৩০-৩৫ দিন, তখন জমিতে মাকড়ের উপদ্রব হতে পারে। মাকড়ের আক্রমণের প্রধান লক্ষণ হলো- পাতা পুরো বা মোটা হয়ে যাবে, পাতার শিরার মাঝের অংশ কুঁচকে যাবে, আর ডগার কচি পাতা ক্রমে তামাটে-বাদামী রংয়ের হয়ে যাবে। চেষ্টা করতে হবে যাতে জমিতে জলের (রসের) অভাব না হয়, সবসময় জো অবস্থা রাখতে পারলে মাকড় থেকে ক্ষতি কম হয়। যদি ১০ দিনের বেশি সময় ধরে মাকড়ের আক্রমণ চলতে থাকে, তবে মাকড়নাশক - যেমন ফেনপাইরিক্সিমেট (৫ ইসি) ১.৫ মিলিলিটার/ প্রতি লিটার জলে বা স্পাইরোমেসিফেন (২৪০ এস.সি) ০.৭ মিলিলিটার/ প্রতি লিটার জলে বা প্রোপারগাইট (৫৭ ইসি) ২.৫ মিলিলিটার/ প্রতিলিটার জলে, ১০ দিন পরে পরে, পর্যায়ক্রমে ব্যবহার করতে হবে। যদি বৃষ্টি হয়ে যায়, তাহলে কমপক্ষে ৫-৬ দিন অপেক্ষা করুন, তার পরেও যদি মাকড়ের লক্ষণ থাকে তবে মাকড়নাশক দিতে পারেন।



- বৃষ্টির পরে ধূসর পোকাকার (গ্রে উইভিল) আক্রমণ।
- ক্লোরপাইরিফস্ (৫০ ইসি) এবং সাইপারমেথ্রিন (৫ ইসি) এর মিশ্রণ, ১.০-১.৫ মিলিলিটার বা ক্লোরপাইরিফস্ (২০ ইসি) ২ মিলিলিটার বা কুইন্যালফস (২৫ ইসি) ১.২৫ মিলিলিটার/ প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে স্প্রে করতে হবে।

বৃষ্টির পরে যদি দিনের তাপমাত্রা বাড়ে ও বাতাসে জলীয় বাষ্পের পরিমাণ বেড়ে যায় - এই অবস্থায় শূঁয়োপোকাকার আক্রমণ হয়। এরা দ্রুত ছড়িয়ে পড়ে। চাষিরা নজর করে এদের ডিম আর শুককীট সহ সব আক্রান্ত পাতা তুলে নষ্ট করে ফেলবেন। প্রয়োজনে ল্যামডা সায়ালোথ্রিন (৫ ইসি) ১ মিলিলিটার বা ইন্ডাক্সাকার্ব (১৪.৫ ইসি) ১ মিলিলিটার/ প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে প্রয়োগ করতে হবে।



ক

খ

ক) মাকড় আক্রান্ত - লাগানোর ৩০-৩৫ দিন পর
খ) জলের অভাব এড়ান, মাটিতে রস বজায় রাখুন।
ফেনপাইরিক্সিমেট (৫ ইসি) ১.৫ মিলিলিটার বা
স্পাইরোমেসিফেন (২৪০ এস.সি) ০.৭ মিলিলিটার বা
প্রোপারগাইট (৫৭ ইসি) ২.৫ মিলিলিটার/ প্রতিলিটার
জলে, ১০ দিন পরে পরে, পর্যায়ক্রমে ব্যবহার করতে
হবে।

III. अन्याय सहयोगी तन्त्र फसलेर कुषि TMरामर्श

(क) शणपाट वा सानहेम्प

१। यारा एखनो शणपाट फसल लागाननि

- एहि समये सर्वेच्च ओ सर्वनिम्न तापमात्रा यथाक्रमे ७९-८१ डिग्रि एवंग २०-२८ डिग्रि हवे बले अनुमान करा हयेछे एवंग सेइ सङ्गे उत्तर प्रदेशेर शणपाट अध्गले आगामी सपुाहे अति सामान्य वृष्टि हते पारे।
- चाषिदेर जमि तैरी करे, बीज लागानोर आगे जलसेच दिये शणपाट बीज लागते परामर्श देओया हछे।
- शणपाटेर प्राक्कुर, अक्कुर, शैलेश, स्वस्तिक, एवंग के-१२ (हलुद) जातेर शंसित बीज लागते हवे
- बीजवाहित रोगे थेके एहि फसल वाँचाते कार्बेञ्जिम २ ग्राम/ प्रति किलो बीजे मिशिये बीज शोधन करते हवे।
- सारि करे लागते हेक्टेर प्रति २५ किलो एवंग छिटिये वुनले हेक्टेर प्रति ७५ किलो बीज लागवे। शणपाट लाइन करे लागानोर सुपारिश करा हय - एक्केत्रे सारि थेके सारिर दुरत हवे २५ सेमि. आर (एकई सारिते) चारा थेके चारार दुरत हवे ५-९ सेमि, बीज २-३ सेमि गतीरे लागते हवे।
- बीज लागानोर समय, प्राथमिक मूलसार हिसाबे नाइट्रोजेनः फसफेटः पटाश - २०ः ८०ः ८० किलो/ प्रति हेक्टेरे ভালोभावे माटिर सङ्गे मिशिये प्रयोग करते हवे।
- ये जमि ते प्रथम बारेर जन्य शणपाट लागानो हवे, सेक्केत्रे बीज निर्दिष्ट राइजेवियाम कालचार दिये लागानोर ३० मिनिट आगे छायाय रेखे मिशिये निते हवे।



शणपाट बीज
(क) के-१२ हलुद;
(ख) शैलेश



(ग) बीज शोधन - कार्बेञ्जिम २ ग्राम/
प्रति केजि बीजे वा कार्बेञ्जिम (१२
शतांश) एवंग म्यानकोजेव (७३ शतांश)
मिश्रणः (घ) जमि तैरी ओ बीज लागानो।



२। समयमतो लागानो शणपाट फसल (एप्रिलेर मारामाबि) फसलेर वयस १५-२५ दिन

- ❖ यदि बीज वोनार पर खरा चलते থাকे, पाता खाओया पोकार आक्रमण हते पारे। एहि समय हालका जलसेच दिन।
- ❖ सेच देवार पर, एकवार क्रिज्याफ नेल उईडारेर पिछनेर दिके टाँछनि वा स्फ़ापार लागिजे वा पाटेर एक चाका निडानि यन्त्र, दुई सारिर मारखान दिये चालाते हवे, एते सब आगाछा नियन्त्रण हवे। चारा पातला करार काज सेरे फेलुन याते प्रति वर्ग मिटार जमि ते ५५-७० टि चारा बजय থাকे।
- ❖ स्टेम गार्डलार ओ शूँयोपोकार आक्रमण विषये चाषिदेर सतर्क থাকते हवे। यदि एहि पोकार आक्रमण देखा यय, तवे क्लोरपाइरिफस २० ईसि, २ मिलि प्रति लिटार जले मिशिये प्रयोग करते हवे।

आगाछा नियन्त्रण ओ चारा
TMतला करार। सारखानता
क्रिसावे क्लोर पाइरिफस
(२० ईसि) २ मिलि/लिटार
जले



खरा अवस्थार TMपाता
खाओया TMपोकार
आक्रमण



III. अन्यान्य सहयोगी तन्त्र फसलें कृषि-प्रणाली

ख) सिसाल

भूमिका: सिसाल (एगोकेब सिसालाना) प्राय-बहुवर्षजीवी पाता থেকে তন্তু উৎপাদনকারী মরুজাতীয় উদ্ভিদ। সিসালের তন্তু থেকে তৈরী দড়ি বিভিন্ন ধরনের জলযান (জাহাজ, লঞ্চ, বড় নৌকা ইত্যাদি) বাঁধার কাজে ব্যবহৃত হয়। ব্রাজিল সিসাল তন্তু উৎপাদনে ও রপ্তানিতে প্রথম স্থান অধিকার করে, আর চীন সব থেকে বেশি সিসাল আমদানি করে। ভারতের উড়িষ্যা, তেলেঙ্গানা, কর্ণাটক, মহারাষ্ট্র ও পশ্চিমবঙ্গের মরুপ্রায় অঞ্চলে সিসাল চাষ হয়ে থাকে। ভারতে সিসালের মোট জমির পরিমাণ প্রায় ৭৭৭০ হেক্টর, যার মধ্যে ৪৮১৬ হেক্টর সিসাল, মাটি ও জল সংরক্ষণের জন্য ব্যবহৃত হয়। ভারতে সিসালের হেক্টর প্রতি গড় উৎপাদন অনেকটাই কম (৬০০-৮০০ কেজি), তবে সঠিক পদ্ধতি অনুসরণ করে চাষ করতে পারলে হেক্টর প্রতি উৎপাদন অনেকটাই বাড়ানো সম্ভব (২০০০-২৫০০ কেজি)। এই ফসলে জলের প্রয়োজন অনেক কম এবং মধ্যভারতের মালভূমি অঞ্চলের মাটি ও আবহাওয়া (সর্বোচ্চ তাপমাত্রা ৪০-৪৫ ডিগ্রি, বৃষ্টিপাত ৬০-১০০ সেমি) সিসালের জন্য উপযোগী, ও গ্রামীণ অঞ্চলের আর্থিক ও সামাজিক উন্নয়নে বিশেষ সহায়ক হতে পারে। সিসাল চাষ এই অঞ্চলের উপজাতি মানুষদের জীবিকা সরাসরি ও কর্মসংস্থানের মাধ্যমে উন্নয়ন করতে পারে। এছাড়াও সিসাল বৃষ্টির জলের বয়ে যাওয়া অপচয় ৩৫ শতাংশ ও ভূমিক্ষয় ৬২ শতাংশ কম করতে সক্ষম।

মাধ্যমিক নার্সারির পরিচর্যা

- নার্সারির জল নিকাশি ব্যবস্থা করবেন ও নার্সারি আগাছা মুক্ত রাখবেন। সুস্থ সাকার পাবার জন্য মেটালাক্সিল ২৫ শতাংশ এবং ম্যানকোজেব ৭২ শতাংশ মিশ্রণ ০.২৫ শতাংশ হারে স্প্রে করে অন্তরবর্তী পরিচর্যা করতে হবে। উদ্ভিদ খাদ্যোপাদান যোগান ও আগাছা দমনের জন্য সিসাল কম্পোস্ট ব্যবহার করা যেতে পারে। যে সব চাষীদের মাধ্যমিক নার্সারি তৈরী বাকি আছে, তারা প্রাথমিক নার্সারিতে বড় করা বুলবিল, মাধ্যমিক নার্সারিতে ৫০-২৫ সেমি দূরত্বে লাগাবেন। বুলবিল লাগানোর আগে পুরানো পাতা ও শিকড় কেটে বাদ দিয়ে ২০ মিনিট ম্যানকোজেব (৬৪ শতাংশ) ও মেটালাক্সিল (৮ শতাংশ) মিশ্রণ ২.৫ গ্রাম প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে প্রয়োগ করতে হবে। এক হেক্টর নার্সারিতে ৮০,০০০ সাকার লাগানো যায় তবে শেষ পর্যন্ত ৭২,০০০-৭৬,০০০ সাকার বাঁচে। ধরে নেওয়া হয় যে মাধ্যমিক নার্সারিতে ৫-১০ শতাংশ চারা মরতে পারে।

সিসালের মূল জমি থেকে সাকার সংগ্রহ

- প্রাথমিক ও মাধ্যমিক নার্সারির মাধ্যমে বুলবিল থেকে সাকার তৈরীর পাশাপাশি, আগে থেকে লাগানো সিসালের মূল পুরানো জমি থেকে সাকার সংগ্রহ করা যাবে। সাধারণত একটি সিসাল গাছ থেকে বছরে ২-৩ টি সাকার পাওয়া যায়। বর্ষার শুরুতে এইসব উপযুক্ত সাকার তুলে - সরাসরি নতুন মূল জমিতে লাগানো যাবে। সাকার লাগানোর আগে পুরানো শিকড় ছেঁটে ফেলতে হবে ও শুকিয়ে যাওয়া পাতা ফেলে দিতে হবে। তবে খেয়াল রাখতে হবে যে শিকড় ছেঁটে ফেলার সময়, সাকারের গোড়ার অঞ্চল যেন ক্ষতিগ্রস্ত না হয়।

নতুন সিসাল খেতের পরিচর্যা

- এক-দুই বছর বয়সের সিসাল ক্ষেতে আগাছা নিয়ন্ত্রণের ব্যবস্থা করতে হবে, যাতে সিসালের জল ও খাদ্যের জন্য আগাছার সঙ্গে প্রতিযোগিতা কমে যায়। জেরা রোগের প্রাথমিক লক্ষণ দেখা গেলে - কপার অক্সিক্লোরাইড ৩ গ্রাম প্রতি লিটারে বা ম্যানকোজেব ৬৪ শতাংশ ও মেটালাক্সিল ৮ শতাংশ মিশ্রণ ২.৫ গ্রাম প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে প্রয়োগ করতে হবে। সঠিক বৃদ্ধি ও ফলনের জন্য হেক্টর প্রতি ২ টন সিসাল কম্পোস্ট এবং ৬০ঃ৩০ঃ৬০ কিলো এন.পি.কে. সার প্রয়োগ করতে হবে। প্রথম বছর, সিসাল গাছের চারধারে গোল করে সামান্য গর্ত করে সার প্রয়োগ করতে হবে।



পিট তৈরী ও জোড়সারি পদ্ধতিতে সাকার লাগানো



মাধ্যমিক নার্সারিতে অন্তরবর্তী পরিচর্যা



সিসাল তন্তু ছাড়ানো ও ধোওয়া



সিসাল তন্তু রোদে শুকানো



সিসাল বুলবিল

मूल जमिंते सिसाल लागानो

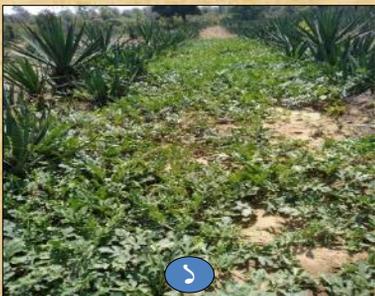
- पुरानो मूलजमिंते सिसाल थेके सरासरी तोला सिसाल साकार ओ माध्यमिक नार्सरी थेके पाओया सिसाल साकार ब्यवहार करे सिसालेर नतुन मूल जमिंते चारा लागते पारले भालो हय। माध्यमिक नार्सरीते बड़ कर साकार, पुरानो पाता ओ शिकड़ हेँटे मूल जमिंते लागते हवे। लागानोर आगे म्यानकोजेब ७४ शतांश ओ मेटालाञ्जिल ८ शतांश - २.५ ग्राम प्रति लिटार जले मिशिये २० मिनिटेर जन्य साकारेर शिकड़ अक्षल धुये निते हवे। साकार पिटेर गर्तेर माबखाने सूचालो कार्ठिं साहाय्य निये लागते हवे।
- साकारेर आकार (साइज) ७० सेमि लम्बा, २५० ग्राम ओजन ओ ५७ टि पाता विशिष्ठ हते हवे। ये सब साकारे रोग-पोकार वा अन्य कोनो प्रकार चापेर (खादयेर वा जलेर अभाव युक्त) लक्षण आछे, सेगुलि बाद दिते हवे।
- सिसाल गाछेर द्रुत बृद्धिंर जन्य हेक्टेर प्रति ५ टन सिसाल कम्पोस्ट, ७० केजि नाइट्रोजेन, ७० केजि फसफेट, ७० केजि पाटाश दिते हवे। नाइट्रोजेन सार २ वारे दिते हवे - मोट परिमानेर अर्धेक वर्षा शुरुंर आगे, आर बाकि अर्धेक वर्षा चले यावार पर।
- ये सब चायिंरा एखनो जमिं निर्वाचन करेननि, तादर जल ना दौंड़य एमन जमिं निर्वाचन करते हवे याते कमपक्के १५ सेमि गडींर माटि थाकते हवे। टालु जमिंते सिसाल चायेर फ्लेवरे, पुरो जमिं चाय देवार दरकार नेइ।
- आगाछा, बोपबाड़ परिष्कार करे १ घन फुटेर पिट ७.५ मिटार — १ मिटार-१मिटार दूरे दूरे वानाते हवे, एते ४,५०० टि पिट हवे येखाने वर्षार शुरुंते दुई सारी (डबल रो) पद्धतिते सिसाल लागते हवे। तबे प्रतिकूलपरिस्थितिते ७.० मिटार — १ मिटार-१मिटार दूरे दूरे पिट करे, प्रति हेक्टेरे ५,००० टि साकार लागानो यावे।
- सिसालेर जन्य तैरी कर पाटि, माटि ओ सिसाल कम्पोस्ट दिये भरि करेते हवे, याते माटि बुरबुरे थाके। अल्ल माटिंर जमिंते हेक्टेर प्रति २.५ टन हारे चून प्रयोग करते हवे। पिटेर गर्तेर मध्ये एमन भावे माटि पूर्ण करते हवे याते १-२ इंचिं डूँ हये थाके, एते सिसाल साकार सहजे दौंड़ते पारवे।
- माटिंर फ्लय रोध करते, सिसाल साकार जमिंर स्वाभाविक चालेर आडाआडिं ओ समोमति रेखा बराबर लागते हवे। साकार संग्रहेर ४५ दिनेर मध्ये जमिंते साकार लागानो सम्पूर्ण करते हवे। लागानोर परे हेक्टेर प्रति कमपक्के १०० टि अतिरिक्त साकार आलादा करे राखते हवे, याते प्रयोजने कोनो कारणे खालि यये याओया जायगाय आवार सिसाल चारा लागिये जमिंते सिसाल चारार आदर्श संख्या बजाय राखा यय।
- पुरानो मूलजमिंते सिसाल थेके सरासरी तोला सिसाल साकारेर परिवर्ते, माध्यमिक नार्सरी थेके पाओया सिसाल साकार ब्यवहार करे सिसालेर नतुन मूल जमिंते चारा लागते पारले भालो हय।

बुलबुल संग्रह - सिसालेर पुष्पदन्ड (याके पोल वला हय) बेर हले, सिसालेर पातार बाड़ वा बुद्धि बन्ध हये यय। एइ प्रत्येकटि पोले प्राय २००-५०० टि बुलबुल तैरी हय; बुलबुले ४-९ टि छोट छोट पाता थाके। एइ बुलबुलकुलि जमिं थेके संग्रह करे प्राथमिक नार्सरीते सिसाल रोपन सामग्री हिसावे लागते हवे।

सिसाल पाता काटा - क्रमशः वातासेर तापमात्रा बेड़े याछे, तहिं देरि ना करे अबिलस्ये सिसाल पाता काटा शेष करते हवे, ता ना हले सिसाल तन्तुर उंपादन कमे यावे। विकेलेर दिके सिसाल पाता काटते हवे एवं चेष्टा करते हवे याते एकइ दिने पाता थेके आँश छाड़नो हये यय। पाता काटार परे, रोगेर हात थेके सिसाल बाँचाते, कपार अक्लिक्कोराइड २-७ ग्राम/प्रति लिटार जले मिशिये स्प्रे करते हवे।

अतिरिक्त आयेर जन्य सिसालेर सङ्गे अन्तर्वती फसलेर चाय

- दुई सारी सिसालेर माबखानेर जमिंते अन्तर्वती फसल हिसावे तरमुज एवं क्लासटार वीन चाय करे यथाक्रमे ५२,००० ओ २९,००० टाका अतिरिक्त आय हते पारे। एइ सब फसले जीवनादायी सेच दिते हवे एवं रोग-पोका थेके सुरक्षार जन्य व्यवस्था करते हवे। एकइ भावे सिसालेर सङ्गे आम ओ अन्यान्य फल चाय करे हेक्टेर प्रति ७४,००० टाका अतिरिक्त आय हते पारे। एइ व्यवस्थाय फल गाछेर रोग-पोका थेके सुरक्षार जन्य व्यवस्था करते हवे।



सिसालेर जमिंते अन्तर्वती फसल (१) तरमुज, (२) क्लासटार वीन, (३) आम

सिसाल भित्तिक सुसंहत खामार व्यवस्था

खरा प्रबन आदिवासी अधुषित अषधले सिसाल भित्तिक सुसंहत खामार व्यवस्था लाडजनकभावे करा येते पारे। एते चाषिर आय वाडवे, कर्मसंस्थान हवे ओ दीर्घमेयादि कृषि व्यवस्था पाओया यावे। एई व्यवस्थाय स्थानीय भावे पाओया विभिन्न धरनेर उँसके काजे लागिणे ओ फसलेर अवशिष्टांश व्यवहार करे - यथेष्ठ आयेर संस्थान हवे। एई सिसाल भित्तिक खामार व्यवस्थाय फसलेर पाशापाशि विभिन्न प्राणी पालनेर व्यवस्था रेखे एई सुसंहत खामार व्यवस्था अर्थनैतिक भावे सफल ओ सार्थक भावे रूपायित हते पारे।

- १। एई खामारे १०० टि विभिन्न जातेर मुरगि येमन - बनराजा, रेड रुस्टार, कडकनाथ पालन करे ८,०००-१०,००० टाका निट लाड हते पारे।
- २। चाषिरा एई खामार व्यवस्थाय दुई गरू पालन करे प्रति बहर २५,००० टाका अतिरिक्त लाड करते पारेन। सिसालेर सडे अश्वरवती फसल हिसावे गोखाद्य चाष, एई गरूर खाओयार जन्य योगान देओया यावे।
- ३। एई व्यवस्थाय १० टि हागल पालन करे प्रति बहर आरो १२,०००-१५,००० टाका अति रिक्त आय हते पारे।
- ४। सिसालेर सडे दुई सारिर माखाने ये उँचू जमिर धान (कादा ना करे शुधु चाष दिये) फलानो हवे, तार खड व्यवहार करे माशरूम चाषेर माध्यमे बहरे १२,००० टाका लाड हते पारे।
- ५। सिसाल चाषेर बर्ज ओ माशरूम तैरीर बर्ज व्यवहार करे भार्मिकम्पोस्त तैरी करे व्यवहार करा यावे, एते माटिर स्वास्थ भालो थाकवे ओ बहरे १४,००० टाका अतिरिक्त लाड हवे।
- ६। सिसाल साधारनत टालु ओ उँचू जमिने लागानो हय - त्हाई एई अवस्थाय वृष्टिर जल धरे लाडजनकभावे व्यवहार करा यावे। येहेतु एई अषधले एमनितेई अपेष्काकृत कम वृष्टि हय, त्हाई वृष्टिर जल धरार व्यवस्था करे - ए जल दिये अन्यान्य भावेओ आय वृद्धि हते पारे। एक हेक्टेर सिसालेर जमिर मात्र एक दशमांश एई जल धरार जन्य व्यवहृत हवे। एई जल धरार पुकुरेर माप हवे ३० मिटार-३० मिटार-१.८ मिटार, आर १.८ मिटार चओडा पाड हवे। एई पुकुरे जल धरे ये ये भावे व्यवहार करे लाडवान हओया यावे ता हलो -
 - सिसालेर सडे चाष करा अश्वरवती फसलेर संकटकालीन सेच एई पुकुरेर जल व्यवहार करे देओया यावे। एते एई सब फसलेर उँपदन ओ आय वाडवे।
 - एई जल व्यवहार करे सिसालेर आँश छाडानोर परे थोया यावे।
 - पुकुरेर पाडे विभिन्न उँचतार फसल येमन - पेपे, कला, नारकेल, सजने एवं अन्यान्य सज्जि चाष करे प्रति बहर १५,०००-२०,००० टाका आय हते पारे।
 - मिश्र माछ चाष पद्धतिते कातला, रूई, मृगेल चाष करे प्रति बहर १०,०००-१२,००० टाका आय हते पारे।
 - एई जले १०० टि हाँस पालन करे प्रति बहर प्राय ८००० टाका आतिरिक्त आय हते पारे।



उडिष्यार वामडाय सिसाल भित्तिक सुसंहत खामार व्यवस्था

ग) रेमि



- এই সময় চাষিরা রেমির নতুন খেত শুরু করতে পারেন। পুরানো রেমির জমিতে - অসমান ভাবে বেড়ে ওঠা রেমি কাণ্ডগুলি সমান ভাবে কেটে ফেলতে হবে (স্টেজ ব্যাক), তারপর সার প্রয়োগ ও জলসেচ দিতে হবে।
- হাজারিকা (আর ১৪১১) জাতের ভালো রেমি রাইজোম বা চারা ব্যবহার করতে হবে। এই রাইজোম বীজশোধনের ছত্রাকনাশক দিয়ে ভালোভাবে শোধন করে নিতে হবে। সারি করে লাগাতে হবে; রাইজোমের পরিমাণ হবে ৮-৯ কুইন্টাল/ প্রতি হেক্টরে বা প্রতি হেক্টরে ৫৫-৬০ হাজার চারা বা কাণ্ড-কাটা লাগবে।
- তিন-চার বার আড়াআড়ি ভাবে চাষ দিয়ে ভালোভাবে জমি তৈরী করতে হবে। জমিতে ৪-৫ সেমি গভীর লম্বা নালি করতে হবে; এই নালিতে সারি করে ১০-১২ সেমি সাইজের রাইজোম ৩০-৪০ সেমি দূরে দূরে লাগাতে হবে। রেমির সঠিক বেড়ে ওঠার জন্য সারি থেকে সারির দূরত্ব হবে ৭৫-১০০ সেমি।
- দুই সারি রেমির মাঝখানের জায়গায় স্থানীয় চাষিদের পছন্দ অনুযায়ী অল্পদিনে ফলন দেয় এমন ফসল চাষ করা যেতে পারে। তবে অনেক ক্ষেত্রে রেমির সঙ্গে আনারস, পেঁপে ইত্যাদিও চাষ করা যায়।
- রেমি ফসলের সঠিক বৃদ্ধির জন্য ও মাটির স্বাস্থ্য বজায় রাখার জন্য অর্জৈব সারের সঙ্গে জৈব সার (খামার সার বা রেমি কম্পোষ্ট) প্রয়োগ করার সুপারিশ করা হয়। লাগানোর ৪০-৫০ দিন পর নাইট্রোজেনঃ ফসফেটঃ পটাশ ২০ঃ১০ঃ১০ কিলো/ প্রতি হেক্টরে প্রয়োগ করার সুপারিশ করা হয়। এর পর, প্রত্যেক বার রেমি কাটার পর, হেক্টর প্রতি ৩০ঃ১৫ঃ১৫ কিলো, এনঃপিঃকে সার দিতে হবে। রেমি লাগানোর ১৫-২০ দিন আগে হেক্টর প্রতি ১০-১২ টন হারে খামার সার প্রয়োগ করতে পারলে ভালো হয়।
- কীট-পতঙ্গ ও রোগের আক্রমণের মাত্রা বুঝে ক্লোরপাইরিফস্ ০.০৪ শতাংশ এবং ম্যানকোজেব ২.৫ গ্রাম/ প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে স্প্রে করার পরামর্শ দেওয়া হয়।
- সময়মতো রেমি কাটা অতি গুরুত্বপূর্ণ, আগে লাগানো ফসলের জন্য, প্রতি ৪৫-৬০ দিন পর পর কাটতে হবে। রেমির বয়স বেশি হয়ে গেলে, আঁশের গুণমান খারাপ হয়ে যায় ও দাম কম পাওয়া যায়।
- যে সব আগাছানাশক সব আগাছা মারতে পারে (বাছাই ক্ষমতাহীন) ও মাটিতে বিশেষ দূষণের কারণ হয় না, তা দিয়ে আগাছা দমন করতে হবে।
- সরুপাতা ঘাসজাতীয় আগাছা নিয়ন্ত্রণের জন্য, রেমি কাটার ২০ দিন পর কুইজালোফপ্ ইথাইল (৫ ইসি) প্রতি হেক্টরে ৪০ গ্রাম প্রয়োগ করার সুপারিশ করা হয়।
- রেমি জল জমা সহ্য করতে পারে না। তাই জমি তৈরীর সময় জল নিকাশী নালা তৈরী করে রাখতে হবে এবং বেশি বৃষ্টির সময় অতিরিক্ত জল বের করে দিতে হবে।



নতুন রেমি লাগানোর জন্য - রাইজোম ও চারা

রেমি রাইজোম লাগানো

রেমি ফসল কাটা



রেমি কাণ্ড কাটার পরে পাতা ছাড়ানো

রেমির আঁশ ছাড়ানো

রেমি তন্তু (আঠা সহ) ছাড়ানোর পর রোদে শুকানো



भाकृअप -केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान



ICAR-Central Research Institute for Jute and Allied Fibers

पाट ओ मेन्ता चाषे जमर स्वाभाविक स्थाने जलाधार भित्तिक पारिवेशवाक्खव स्वानिर्भर खामार व्यवस्था

- वृष्टि अनियमित वितरण, पाट पाचानोर जल उपयुक्त सर्वसाधारणेर पुकुरेर अभाव, माथाप्रति कम जलेर योगान, चाषेर खरच ओ कृषि श्रमिकेर मजुरि वृद्धि, पुकुर - नदी - नाला शुक्रिये याओया इत्यादि विवेचना करे देखा याय, चाषिरा पाट ओ मेन्ता पाचानोते असुविधार सम्बुधीन ह्छेहन। कम जले एवं सर्वसाधारणेर पुकुरेर मयला जले क्रमागत पाट पाचानोर फले, पाटेर आंशेर मान खाराप ह्छे एवं आन्तर्जातिक बाजारे प्रतियोगिताय टिके थाकते पारहे ना।
- एहि सब समस्यार समाधानेर जल - वर्षा शुरुअर आगेहि चाषिरा जमर स्वाभाविक स्थाने जलाधार भित्तिक खामार व्यवस्था ग्रहन करे पाट ओ मेन्ता चाषे लाभवान हते पारैन। साधारणत पाट चाषेर अक्षले वृष्टिपातेर परिमान भाले (वार्षिक १२००-२००० मिलिमिटर) एवं एर प्राय ७०-८० शतांश वृष्टि जल वये चले गिये नष्ट हय, यार किछुटा अंश जमर स्वाभाविक निचु दिके पुकुर तैरी करे धरे राखा येते पारे।

पुकुरेर माप एवं एक एकर जमर पाट पाचानोर जल पचन पद्धति

- पुकुरेदर आकार हवे ८० फुट लम्बा, ७० फुट चओडा ओ ५ फुट गभीर। एक एकर जमर पाट वा मेन्ता एहि पुकुरे दु'वार जग देओया यावे। पुकुरेर पाड यथेष्ट चओडा (१.५-१.८ मिटर) हवे, याते पे'पे, कला ओ सज्जि लागानो याय। एहि खामार प्रणालि/ व्यवस्था पुकुर ओ तार पाडु नये मोट आयतन १८० वर्ग मिटर हवे। चाषिरा यदि एहि खामार प्रणालिते आरो वेशि परिमाने जमि व्यवहारे इच्छुक, तहले पुकुरेर माप ५० फुट-७० फुट-५ फुट हते पारे।
- पुकुरेर भितरेर दिके १५०-७०० माइक्रनेर कृषिते व्यवहार योग्य पलिथिन दिये टेके दिते हवे याते पुकुरेर जल चुइये वा निचे चले गिये नष्ट ना हय।
- एकसङ्गे तिनटि जक तैरी करते हवे एवं एक एकटि जके तिटि करे सुतर थाकवे। पुकुरेर तलार माटि थेके जक २०-७० सेन्टिमिटर उपरे थाकवे एवं जकेर उपर २०-७० सेन्टिमिटर जल थाकवे।

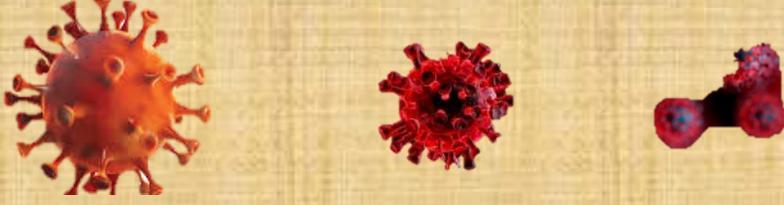
जमितेहि तैरी पचन पुकुरेर सुविधा

- प्रचलित पद्धतिते पाचानोर फ्फेरे पाट केटे पाचानोर पुकुरे वये नये याओयार खरच एकर प्रति ८०००-५००० टाका एहि पद्धतिते साश्रय हवे।
- प्रचलित पद्धतिते १८-२१ दिने पाट पचे; किन्तु एहि नतुन पद्धतिते एकरे १८ केजि क्रुइज्याफ सोना व्यवहार करे १२-१५ दिने पाट पचे यावे। द्वितीय वार पाचानोर समय क्रुइज्याफ सोना अर्धक लागवे एवं एते ८०० टाका खरच बाँचवे।
- पाट पाचानोर जल वृष्टि नतुन धरा जल व्यवहार करले वा ए समय वृष्टि हले - धीरे वये चला जल पाओया यावे एवं आंशेर गुनमान कमपक्के १-२ ग्रेड उन्नत हवे।

तैरी करा पुकुरे पाट ओ मेन्ता पाचानो छाडाओ वृष्टि धरा जल आरो विभिन्न उपाये व्यवहार करा यावे -

- १। विभिन्न उच्चतार वागिचा फसल व्यवहार माध्यमे पे'पे, कला, अन्यान्य सज्जि चाष करे प्रति ट्याक्के प्राय १०,०००-१२,००० टाका लाभ हवे।
 - २। वायुते श्वास निते पारे एमन माछ येमन - तिलापिया, मागुर, शिप्पि माछ चाष करे ५०-७० केजि माछ पाओया येते पारे।
 - ३। एहि व्यवस्था म्मोमाछि पालन करा यावे (प्रति ट्याक्के लाभ ९,००० टाका) एवं एते बीज उत्पादने परागमिलने सुविधा हवे।
 - ४। माशरुम चाष, भार्मिकम्पेपेपे तैरी करे आय हते पारे।
 - ५। एहि पुकुरे प्राय ५० टि हाँस पालन करे ५,००० टाका अतिरिक्त आय हते पारे।
 - ६। पाट पाचानो जल, पाटेर सङ्गे फसलचक्र लागानो सज्जि ओ अन्यान्य फसलेर सेचेर जल व्यवहार करा यावे एवं प्रति एकरे ८,००० टाका अतिरिक्त लाभ हते पारे।
- सुतरां जमिते एहि पद्धतिते पुकुर वानिये, मात्र १,०००-१,२०० टाकार पाटेर शक्ति करे, चाषिरा अनेक धरनेर फसल फलिये, प्राणी-मत्स-म्मोमाछि पालन करे प्राय ७०,००० टाका आय करते पारैन। एछाडाओ एहि पद्धतिते चाषेर फले बहनेर खरच प्राय ८,०००-५,००० टाका बाँचवे। सेहि सङ्गे एहि प्रयुक्ति, चाषवासे चरम आवहाओयार - येमन खरा, बन्या, घूर्णिबाड़ इत्यादिर शक्तिकर प्रभाव कम करते सम्म।

IV. कोरोना (COVID-19) भाईरसैर संकुरमण छुडैये पडा ठैकाते ये ये निरापत्रामूलक ओ प्रतिरोध व्यवस्था ग्रहन करते हबे एवं मेने चलते हबे



- 1। कुषकदेर चाषबासेर काजेर समय निरापत्रा व्यवस्था हिसाबे एक जनेर थेके आरेक जनेर सामाजिक दुरतव्व बजाय राखते हबे। चाषिरी जमी चाष, बीज बपन, आगाछा नियंत्रण, जलसेच देओया इत्यादि काजेर समय डाङ्गारि परामर्श मतो मुखोस (मास्क) परबेन, आर माबे माबे सावान-जल दिये हात धोबेन।
- 2। यखन एकई कुषि यन्त्रपाति येमन - लाङ्गल, ट्राङ्कुर, पाओयार टिलार, बीज बपन यन्त्र, निडानि यन्त्र, जलसेचेर पाम्प अनेके मिले पर पर भागाभागी करे व्यवहार करबेन, तखन खेयाल राखते हबे एई यन्त्रपातिगुलि येन सठिकभाबे परिष्कार करा हय। कुषि यन्त्रपातिर ये ये अंश बार बार हात दिये स्पर्श करते हय, सेई अंशटा सावान जल दिये धुये निते हबे।
- 3। चाषेर काजेर फाँके अवसरेर समय, खाबार खाओयार समय, बीज शोषनेर समय एवं सार नामानो वा तोलार समय - पर्याप्त सामाजिक दुरतव्व (कम पक्षे 3-8 फुट) बजाय राखते हबे।
- 4। यतोटा संभव, कुषि काजे परिचित लोकेदेरई काजे लागान। ভালोभाबे खोज खबर नियेई सेई मजुर काजे लागते हबे, याते कोनो कोरोना भाईरस बाहक कुषिकाजे आपनार अण्गले चले आसते ना पारे।
- 5। बीज ओ सार परिचित दोकान थेके किनबेन एवं दोकान थेके फिरे आसार परेई सावान जल दिये ভালोभाबे हात धुये नेबेन। बाजारे बीज, सार इत्यादि किनते याबार समय अवश्यई मुखोस (मास्क) परबेन।
- 6। कोभिड-19 भाईरस रोग संक्रांत जरुरि स्वास्थ परिसेवा विषये तथ्य जानार जन्य आपनार स्मार्ट मोबाईले 'आरोग्य सेतु' नामेर एप्लिकेशन सफटओयार व्यवहार करुन।



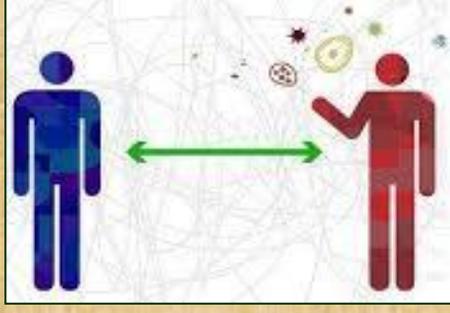
माबेमाबे सावान दिये हात धोयार अभास करुन

हँचि वा काषिर समय रुमाल वा टिसू कागज चापा दिन

बार बार चोख-मुख हात दिये स्पर्श करबेन ना

बाहैर सब समय मास्क वा मुखोस व्यवहार करुन

V. TMपाट कलेर (जूट मिल) कर्मचारिदर जन्य TMरामर्श



- पाट कल (जूट मिल) चालू राखार जन्य, पाट कलेर सीमानार मध्ये थाका कर्मचारिदर दिये छोटो छोटो ब्याचे, बारे बारे शिफ्ट करे काज चलाते हवे।
- पाट कलेर मध्ये आनेक जायगाय कलेर (जल) व्यवस्था करते हवे, याते कर्मचारिरा मावे मावे हात धुये निते पारैन। काज चलाकालीन अवस्थाय, कर्मचारिरा धूमपान करबेन ना।
- मिलेर शौचागार गुलि बार बार परिसकार करते हवे, याते कर्मचारिरा रोगेर आक्रमणे ना पडेन।
- कर्मचारिदर, ग्लाउस, जूतो, मुख टाकार व्यवस्था एवंग अन्यान्य सुरक्षार जन्य परामर्श दिते हवे।
- मिलेर मध्येई, काजेर जायगा बार बार बदल करा येते पारे, याते कर्मचारिदर मध्ये परामर्श मतो सामाजिक दूरत बजाय थाके।
- ये सम कर्मचारिदर यन्त्रपातिर (मेशिनर) अनेर स्थाने बार बार हात दिते हय, तादर जन्य आलादा भावे हात धोयार वा स्यानिटाइज करार व्यवस्था राखते हवे। एछाडांओ मेशिनर ओई जायगागुलो बार बार सावान जल दिये परिसकार करते हवे।
- वयस्क कर्मचारिदर अपेक्षकृत फाँका वा भिड कम जायगाय काज दिते हवे, याते तादर भाईरासेर संक्रमण ना हय।
- मिलेर कर्मचारिरा टिफिनर समय वा अवसरेर समय भिड करे एक जायगाय आसबेन ना एवंग ७-८ फुट दूरत बजाय रेखेई हात धोबेन।
- यदि कोनो मिल कर्मचारिर ई धरनेर शारीरिक समस्या देखा यय, तवे तिनि अबिलखे मिलेर डाक्टर वा मिल मालिकेर सडे योगायोग करबेन।



आपनादर सवाइके सुस्थ्य ओ निरापद थाकार जन्य शुतेच्छा जानाई

धारणा ओ प्रकाशनाः

डः गौराङ्ग कर,

निर्देशक,

भा.कृ.अ.प. - क्रिज्याफ,

नीलगङ्ग, ब्यारकपुर,

कोलकाता-९००१२१, पश्चिमबङ्ग

Acknowledgement: The Institute acknowledges the contribution of Chairman and Members of the Committee of Agro-advisory Services of ICAR-CRIJAF; Heads/ Incharges of Crop Production, Crop Improvement and Crop Protection division, In-charges of AINPNF and Extension section of ICAR-CRIJAF and other contributors of their division/section; In-charges of Regional Research Stations of ICAR-CRIJAF and their team; In-charge AKMU of ICAR-CRIJAF and his team for preparing this Agro-advisory.

[Issue No: 08/2022 (24 April – 8 May, 2022)]